इकाई 20 पर्यावरण अपकर्ष एवं पर्यटन

इकाई की रूपरेखा

20.0 उद्देश्य
20.1 प्रस्तावना
20.2 प्रतिरोध
20.3 पर्यटन के प्रभावों का विश्लेषण
20.4 पर्यटन क्यों ?
20.5 पारिस्थितिकीय पर्यटन क्या है
  20.5.1 ऐसे पर्यटन विकास का क्या प्रभाव पड़ा ?
  20.5.2 समस्याएं और समाधान
20.6 संरक्षण एवं विकास
  20.6.1 विकल्प
  20.6.2 वन्य प्राणी पर्यटन दिशानिर्देशन के उदाहरण
  20.6.3 बाघ का प्रदर्शन
  20.6.4 वन मुखिया
20.7 सारांश
20.8 शब्दावली
20.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

20.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- यह समझ जाएंगे कि पर्यटन किस प्रकार विषम विकास प्रक्रिया का साझेदार बन सकता है जो भूमि उपयोग ढांचे और लोगों के विस्थापन में सहयोग देता है।
- पारिस्थितिकीय पर्यटन के विशिष्ट उदाहरण से आप समझ जाएंगे कि किसी पारिस्थतिकीय तन्त्र की वहन क्षमता का उल्लंघन किस प्रकार किया जा सकता है और उसके द्वारा स्वयं पारिस्थितिकी तन्त्र नष्ट कर दिया जाता है।
- पारिस्थितिकीय पर्यटन की अविश्लेषित समस्याओं को समझ जाएंगे जो पर्यावरणीय अपकर्ष में सहयोग देते हैं।
- ये भी समझ जाएंगे कि इन समस्याओं पर कैसे काबू पाया जा सकता है।

20.1 प्रस्तावना

मुख्यधारा के आयोजकों ने विकास की धारणा को आलोचनात्मक रूप से नहीं परखा क्योंकि आय उत्पन्न करने की दृष्टि से संसाधनों के खोज की प्रक्रिया पीढ़ियों से विज्ञानियों और अर्थशास्त्रियों की रुचि का कारण रही है। वर्तमान विकास के सिद्धान्त में हमने उद्योगीकरण, आधुनिकीकरण एवं उपयुक्त प्रौद्योगिकी के युग को पार कर लिया है और इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि हमने ऐसी असावधानी से प्रकृति का उपयोग किया है कि आने वाली पीढ़ी के लिए हम कुछ छोड़ कर नहीं जाएंगे। आज हम सब स्थायी विकास की धारणा से परिचित हैं यह ऐसा हस्तक्षेप है जो भूमंडलीकरण की मनोवृति के साथ साथ चलता है। विकास की दृष्टि से प्राकृतिक संसाधन सम्पूर्ण विश्व समुदाय का माना जाता है न कि उन

देशों का जो नृजातीयता, स्थिति या संस्कृति द्वारा परिभाषित होते हैं। वर्तमान में विकास माडल ही मुक्त बाजार का माडल है जहां उपभोग उत्पादक तन्त्र को संचालित करता है। केवल पर्यावरण, मानव अधिकार बाल श्रम और ऐसी ही "अनुचित व्यापारिक प्रथाएं" जैसे मुद्दे ही मुक्त बाजार की सीमाएं हैं। भारत जैसे देश में 5 करोड़ लोग विकास की वरीयताओं का निर्धारण करते हैं। उनकी आवश्यकताएं निर्धारित करती हैं कि क्या पैदा करना चाहिए और क्या उपभोग करना चाहिए। परिणामस्वरूप प्रत्येक विकास क्रिया ने भूमि उपयोग के ढांचे को बदला है, लोगों को विस्थापित किया है। पर्यावरण को संकट में डाला है और सीमावर्ती लोगों के एक बड़े भाग के अदृश्यता में खदेड़ दिया है। विकास के ऐसे प्रभाव अब केवल वृहत् परियोजनाओं जैसे बांध, विद्युत एवं स्टील प्लान्ट और प्रतिरक्षा संस्थानों तक ही सीमित नहीं है। पर्यटन जिसे निर्धूम उद्योग कहा जाता था अब भूमि, वायु एवं जल के विवेकहीन उपयोग में साझेदार बनते जा रहे हैं और समुदायों, उनकी संस्कृति, उनकी जीवन शैली और प्रथाओं को दूषित कर रहे हैं।

20.2 प्रतिरोध

मुख्यधारा के दृष्टिकोण का प्रतिरोध और उसके परिणाम देश के प्रत्येक अंचल में बढ़ रहे हैं यहां तक कि वहां भी यह विकासात्मक हस्तक्षेप के प्रति प्रत्यक्ष रूप से विरोध की अभिव्यक्ति नहीं है। स्वयं सेवकों के समूहों और व्यक्तिगत लोगों ने मुख्यधारा के विकास के निहित खतरों से अवगत कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विकास पर हुए वाद विवाद के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय, राजकीय एवं स्थानीय स्तर के विकास के प्रति जनता का ज्ञान समुदाय के हितों के विरूद्ध है। हम सब नर्मदा एवं चिपकों संघर्षों के आन्दोलनों से भली भांति परिचित हैं। इनके विषय में आप इस खण्ड की इकाई 22 में पढ़ेंगे। आधारभूत मुद्दे जिन्हें इन संघर्षों ने उजागर किया है वे हैं :

- आर्थिक विकास का परम्परागत कठोर मॉडल की कमजोरी, और
- समाजिक समस्याओं को सुलझाने के वृहत परियोजनाओं और गहन विकास की कार्य क्षमता।

अत: विकास का नवीन साहित्य और अनुसंधान विरोध प्रकट करते हुये लोगों से सम्बद्ध है। विकास के मौजूदा दृष्टिकोण के स्थान पर कोई अन्य वैकल्पिक माडल नहीं हो सकता है। विकास के अन्य बहुलवादी मॉडलों के एक जैसे विषयक सिद्धान्त होंगे जिनकी निम्नलिखित के प्रति प्रतिज्ञा होगी :

- लोगों को उनके अपने संसाधनों से सम्बन्ध निर्धारित करने की अनुमति देना।
- स्थानीय प्रज्ञा और परम्पराओं का आदर करना।
- किसी विशिष्ट स्थिति और समस्या के प्रति एक नियम को सार्वभौम करने के बजाए वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक कौशल अपनाना। वन एवं तट रेखाओं जैसे नए सामान्य संसाधनों के उपायों में विकास के गलत निर्देशन के उदाहरण देखे जा सकते हैं। जिन वनों ने पीढ़ी दर पीढ़ी जन जातीय समुदायों का पोषण किया है अब उन्हें प्रकृति एवं वन्य जीव पर्यटन सहित औद्योगिक और व्यापारिक उपयोग में लाया जा रहा है। मछुआरे या मछुआ समुदायों की अब तटरेखा तक असीम पहुंच नहीं है। जल, कृषि, समुद्रतटीय, सैरगाहें, एवं गॉल्फ के मैदान पारिस्थितिकीय प्रेमी अथवा हरित पर्यटन के लिए अब नए मूल संसाधन, नए उत्पाद बन गए जिन्हें तीसरी दुनिया के अधिकतर देश आजकल विकसित कर रहे हैं।

20.3 पर्यटन के प्रभावों का विश्लेषण

अनियोजित या अकुशल रूप से आयोजित पर्यटन से उत्पन्न होने वाली कुछ समस्याएं संक्षिप्त में नीचे दी गई हैं :

- निर्वनीकरण
- कुछ स्पीशीज पर विशेष ध्यान और अनेक स्पीशीज का ह्रास

- ईंधन एवं जलाऊ लकड़ी के लिए प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास
- भूमि अपरदन (erosion) एवं तटीय अपरदन
- भूमि अपकर्ष, जल प्रदूषण एवं कूड़ा कचरा
- सड़क निर्माण एवं बस्तियों तथा भूमि उपयोग के परिवर्तनों का प्रभाव
- कम संख्या वाले निर्धन किसानों के जनसमूहों का स्थानान्तरण और बाहरी एजेन्सियों का आगमन
- नगरीकरण और पानी, बिजली, ढांचागत सुविधा उपलब्ध कराने की सहवर्ती समस्या
- झुग्गी झोपड़ियों का विकास
- देश के अत्यन्त निर्धन अथवा सुदूर क्षेत्रों में सामाजिक सम्बद्धता की समस्या।

20.4 पर्यटन क्यों ?

कोई भी पूछ सकता है किसी निर्धन देश या निर्धन क्षेत्र के लिए पर्यटन ही एकमात्र ऐसा विकल्प क्यों हैं जिसे राज्य की सहायता से निवेश सहायता एवं कर की छूट द्वारा विकसित किया जाना चाहिए। प्राय: उत्तर सरल होता है– राष्ट्र निर्माण हेतु आवश्यक विदेशी मुद्रा विनियम अर्जित करने के लिए हमारे पास निर्यातोन्मुखी अर्थव्यवस्था होनी चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF), विश्व बैंक सुधारों के संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रमों के प्रति दशाएं परोक्ष निर्यात जैसे पर्यटन को प्रोत्साहित करती हैं जिसे अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों जैसे विश्व पर्यटन संगठन के द्वारा विकास के साधन के तौर पर बढ़ावा दिया गया। उनका तर्क अत्यन्त आकर्षक शब्दों में व्यस्त किया जाता है। पारिस्थितिकीय पर्यटन एवं सैरगाह के पर्यटन से भिन्न हैं : यह भिन्नता एवं विकास मिथक पर आधारित है जिसमें व्यक्त किया गया है पर्यटन के कार्यों में प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों की उपयोगिता को जो स्थान दिया गया है वह पर्यावरणीय सुरक्षा एवं संरक्षण के प्रति चेतना जागृत करने और सहभागिता बढ़ाने का साधन बन सकती है।

चित्र-1 : पर्वतों पर सड़कों का निर्माण पर्यावरण को सुधार सकता है।

मिथक में और आगे कहा गया है : राष्ट्रीय जनसंख्या के लिए अनेकों विकल्पों सहित सुचारू रूप से आयोजित प्रकृति उनकी पर्यावरणीय शिक्षा में सहयोग दे सकती है।

20.5 पारिस्थितिकीय पर्यटन क्या है ?

पर्यटन की हर सभी रूप जो अन्वेषणात्मक है, अनुभव पर बल देते हैं और प्राकृतिक संसाधन को नष्ट किए बिना प्रकृति का सम्मान और संरक्षण जिनका उद्देश्य हो वह पारिस्थितिकीय पर्यटन समझा जाता है। बेलीज नामक मध्य अमरीकी प्रदेश के पर्यटन उद्योग ने इसे यह नाम दिया। यह प्रदेश प्राकृतिक संसाधनों में बहुत समृद्ध है। पारिस्थितिकीय पर्यटन की किस्मों में प्रकृति के वैज्ञानिक, विनोदी, साहसी एवं निष्क्रिय प्रयोग को सम्मिलित किया जा सकता है।

भारत में पारिस्थितिकीय पर्यटन की उन नई प्रवृत्तियों की एक शाखा थी जो भारत को अवकाश अभिमुख गन्तव्य स्थल के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रही थी ताकि बड़ी संख्या में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक आकर्षित हो सकें। ये भारतीय उत्पाद को निष्क्रिय प्रकार (जैसे स्मारक आदि) से निकाल कर अधिक क्रियाशील प्रकारों जैसे साहसिक वन्यजीव और विरासती पर्यटन में परिवर्तित करने के लिए है।

20.5.1 ऐसे पर्यटन विकास का क्या प्रभाव था ?

ऐसे आरक्षित एवं अधिसूचित क्षेत्र जहां वन्य जीवों का बाहुल्य है और विशेष रूप से बाघ, हाथी और गैंडे पाए जाते हैं पर्यटकों के लिए विकसित किए गए। प्रारंभ में मृग-वनों या मध्यवर्ती क्षेत्रों में आवास, सड़कें, परिवहन और गाइड उपलब्ध कराए गए। मण्डलों के निर्धारण की प्रक्रिया में मूल समुदाय वहां से बेदखल कर के अधिसूचित क्षेत्र के बाहर पुन: स्थापित कर दिए गए जिसने बहुत कुछ उनकी पारम्परिक व्यवसायिक संरचना को बदल दिया। पर्यटकों को उन पारम्परिक निवासियों की अपेक्षा संरक्षण के प्रति अधिक ज्ञानी समझा गया जिन्होंने अपने पारम्परिक व्यवसाय एवं आवास के साथ साथ वनों के उत्पादों पर से अपना अधिकार खो दिया। यह माना जाता है कि इन मृग-वनों का शुभारंभ पारिस्थिति तन्त्र और उसके पारिस्थितिकीय कार्यों को सुरक्षित रखने में सहयोग देता है।

पारिस्थितिकीय तन्त्र अपनी वहन क्षमता पर निर्भर होता है। दूसरी ओर अधिकांश पर्यटक पथ एवं दृश्य निर्वहन क्षमता के मौलिक सिद्धान्त-एकत्र न होना-का उल्लंघन करते हैं। ढाँचागत सुविधा में प्रयोक्ता के एकत्र होने के प्रारूप का पालन करने की प्रवृत्ति है। ढाँचागत सुविधा का दबाब उपलब्ध कानूनों की अवहेलना को प्रोत्साहन देता है। उदाहरणार्थ तटीय क्षेत्र नियम ज्वारीय रेखा से 500 मीटर के अन्दर निर्माण एवं ढाँचागत सुविधा को प्रतिषेध करता है किन्तु होटल लॉबी द्वारा इसका अतिक्रमण करके अपनी इच्छानुसार इस नियम का उल्लंघन किया गया है।

पर्वतीय समुदाय दिन प्रतिदिन अपशिष्ट निपटान एवं जलाऊ लकड़ी तथा ईंधन की बढ़ती हुई आवश्यकता के प्रति चिन्तित होते जा रहे हैं। पदयात्री और पर्वतारोही टनों खान पान का सामान अपने साथ लाते हैं किन्तु खाली डिब्बे अपने साथ वापस नहीं ले जाते। कूड़ा कचरा संरक्षण की प्रमुख समस्या बनता जा रहा है।

20.5.2 समस्याएं और समाधान

जैसे जैसे पारिस्थितिक तन्त्र बड़े पैमाने पर पर्यटकों द्वारा स्वीकृति प्राप्त करता है, क्या जैव/तकनीकी विधियों द्वारा उत्पन्न संरक्षण सहित मौलिक संरक्षण विरोध करता है ? यह समस्या स्थानीय लोगों के हितों को ध्यान में रखते हुए सुलझानी चाहिए।

एक लोकप्रिय प्रस्ताव यह है कि सारे प्राकृतिक संसाधनों विशेष रूप से अद्वितीय क्षेत्रों की सुरक्षा की जानी चाहिए। किन्तु सुरक्षा पर धन व्यय होता है। पर्यटकों सहित औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रयोक्ताओं से शुल्क प्राप्ति के योग्य संसाधनों तक कालिक एवं स्थानिक दोनों प्रकार से पहुंच सीमित होनी चाहिए। यह क्षेत्र-विभाजन करके प्राप्त किया जा सकता है। अत: ढाँचागत सुविधा तथा सेवाओं को योजनाबद्ध किया जाना चाहिए। इस प्रक्रिया में सामान्यता पुन: निर्दिष्ट प्रमुख मण्डल से पारम्परिक समुदाय का विस्थापन

चित्र 2 : पदयात्रियों को खाली पैकेट ले जाना चाहिए

सम्मिलित है। तत्पश्चात विस्थापित लोग मध्वर्ती मण्डल के बाहर पुन: स्थापित किए जाते हैं। पुन:स्थापना का परिणाम समुदायों के साथ ही वनों के लिए भी हानिकार सिद्ध हुआ है। गुजरात के गि क्षेत्र में पशुओं के स्वामियों को कृषि भूमि पर पुन: स्थापित किया गया। किन्तु ये ऐसा व्यवसाय था जिस विषय में उनको कोई ज्ञान नहीं था। एक दो वर्षों में वे कंगाल हो गए और नगरों की झोपड़पट्टियों में मेहनत मजदूरी के लिए चले गए। इसी प्रकार रणथम्बोर के रिजर्व में अपकर्ष हुआ क्योंकि वहां निवास करने वाले समुदाय वहां के निवासी पुनरूजीवन चक्र नियन्त्रित करना नहीं चाहते थे।

उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि सरकार ऐसी पारिस्थितिकीय पर्यटन की धारणा विकसित नहीं कर सकी जो आवासी समुदायों में संरक्षण के प्रयासों के ज्ञान को समन्वित करती है। विश्लेषणों से पता चला है कि विस्थापित समुदाय को पारिस्थितिक पर्यटन से बहुत साधारण लाभ हुआ। फिर भी संरक्षकों का विचार है कि यह प्रजातियों की सुरक्षा का अकेला व्यापार है और अनधिकृत शिकार और लकड़ी के कटान को नियन्त्रित करने का प्रभावी साधन भी है। वह वहन क्षमता के प्रति भी चिन्तित हैं। नगर के वैचारिक ढांचे के अन्दर वहन क्षमता शब्द के उपयोग से प्रारंभ होने वाला सैद्धान्तिक वाद विवाद कोई ऐसी प्रणाली विकसित नहीं कर सका जो भौतिक, पारिस्थितिकीय एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से वहन क्षमता को परिभाषित कर सके।

जो मुद्दे अनसुलझे हैं वे निम्नलिखित हैं :

- एक समय में कितने पर्यटकों को आने की अनुमति दी जाए ?
- नियन्त्रण की प्रक्रिया को किस प्रकार उपयोग में लाया जाए जैसे दिन की रोशनी का समय, खोले जाने का समय और समय सीमा; वर्षा ऋतु और बाढ़ का समय, अपरदन; परिवहन के शोर के कारण अशान्ति, भाषा एवं पहनावे के नियम आदि,
- नियन्त्रण प्रक्रिया को कार्यान्वित करने की योग्यता
- एकान्त, प्राकृतिक सौन्दर्य और सांस्कृतिक पहचान की सुरक्षा की आवश्यकता।

केन्या जहां वन्य प्राणी पर्यटन एक बहुत बहुमूल्य गतिविधि है वहां ऐसे द्वन्द्व के समाधान के लिये कार्य करने की इच्छा पाई जाती है। स्थानीय जनजाति मसाई लोग उन मृग उद्यानों का प्रबन्ध करते थे जहां काफी संख्या में सैलानी आते थे। उनसे प्राप्त धन का 19% उन जातियों को प्राप्त होता था और शेष धन आंचलिक परिषद ढाँचागत सुविधा के विकास पर व्यय करती थी। इस नीति का यह परिणाम निकला कि पर्यटन में विस्फोटक वृद्धि हुई और फलस्वरूप महत्वपूर्ण संरक्षण द्वन्द्व पैदा हो गया।

बोध प्रश्न 1

1) पर्यावरण पर पर्यटन के कुछ प्रभावों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन को विकास कार्यकलाप के रूप में बढ़ावा देने के लिए विश्व पर्यटन संगठन ने कौन कौन से तर्क दिए हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) पारिस्थितिकीय वहन क्षमता के कौन कौन से मुद्दे निपटाए नहीं गए हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

20.6 संरक्षण एवं विकास

प्राकृतिक संसाधनों और प्राकृतिक आवासों के मनोरंजनपूर्ण उपयोगों के परिणामों की एक अनिश्चितता रही है। वाद विवाद से उस क्षेत्र के लोगों और सरकारी नियोजकों के मध्य विश्वास के टूटने का पता चलता है। लोग नीतियों को प्रभावित करने में असहाय अनुभव करते हैं और उन्हीं नीतियों का विरोध करने लगे हैं जिन्हें पहले वह समर्थन देते थे। यह कहना सही है कि बिना सार्वजनिक समर्थन के संरक्षणात्मक नीतियों का कार्यान्वयन असंभव है क्योंकि संरक्षण को प्राय: उत्तरजीविता के अन्तर्विरोध के रूप में देखा जाता है।

अत: ऐसी प्रणाली विकसित करना महत्वपूर्ण है जो इन विरोधों को समाप्त कर सके, सार्वजनिक समर्थन जुटा सके और विविध प्रकार से आवश्यकताओं को पूरा कर सके। सबसे अच्छा तरीका है कि नियमों को सख्ती से लागू किया जाए। फिर भी एक अधिक अंत:संपर्क तन्त्र ऐसा सामजंस्य विकसित करने का प्रयास करता है जो जनता को उसके व्यवहार के अनुकूल करने में सहायक हो ताकि किसी विकासात्मक मध्यस्थता के नकारात्मक प्रभाव को घटाया या कम किया जा सके।

चूँकि समाज पर्यावणीय मुद्दों की बढ़ती हुई जटिलताओं का सामना कर रहा है इसलिए उन विधियों का मूल्यांकन लाभप्रद हो सकता है जिनके माध्यम से मतभेदों को निपटाया जाता है :

- विवादियों के निहित स्वार्थों को हल करने के लिए बातचीत का उपयोग
- यह निर्णय करना कि कौन सही है और किस के अधिकारों का उल्लंघन हो रहा है
- यह निर्णय करना कि कौन से प्रभाव अधिक शक्तिशाली हैं और वे निर्णय लेने को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

विवादों को बातचीत द्वारा हल करने की विधि अधिक समय तो लेती है किन्तु अधिक समय तक चलने वाली है। ऐसा निम्नलिखित कारणों से होता है :

- यह एक स्वैच्छिक प्रत्यक्ष प्रक्रिया है
- इसकी कार्यविधियां अधिक औपचारिक हैं अत: बेहतर संप्रेषण प्रस्तुत करती है।
- ये लोगों और उनके संसाधनों के मध्य वर्तमान सम्बन्धों को बचाती हैं और इस प्रकार वर्गों और व्यक्तियों के हितों की रक्षा करती हैं।
- समाधान की रूपरेखा तैयार करने में अधिक लचीलापन मौजूद रहता है।
- निष्कर्ष अधिक भविष्यसूचक हैं।
- सहयोगी होने के कारण उन साधारण समझौतों से वार्ता बेहतर है जो प्राय: नकार दिए जाते हैं।

परिवर्तन	निर्णयकर्त्ता	अधिकारी द्वारा निर्णय	बल द्वारा निर्णय
निर्णय करने वाला मस्यस्थ	वार्ता		
मध्यस्था न करना	सहयोग	मुकदमा	एकपक्षीय बल प्रयोग

पारस्परिक हितवाले पक्षों का वार्ता द्वारा निर्णय के लिए सहमत होना, आपस में बैठकर वार्ता के परिणाम के निर्धारण के लिए एक दूसरे की सापेक्ष क्षमताओं और कमजोरियों का पता लगाना किसी भी विवाद समाधान तंत्र की समस्या है।

20.6.1 विकल्प

एक अच्छा विकल्प दृष्टिकोण निम्नलिखित बिन्दुओं पर आधारित हो सकता है :

- स्थिति का मूल्यांकन करना
- वार्ता की नीति विकसित करना
- मंच की रूपरेखा तैयार करना
- पक्षों को आमने सामने बैठाना
- उसकी स्वीकार्यता को आंकने के लिए परिर्वतन के प्रभाव को ध्यान में रखना
- क्षेत्र के इस्तेमाल के पश्चात सुरक्षित रखे जाने वाले गुणों को परिभाषित करना
- सुधारात्मक कार्यों को प्रारंभ करने की प्रक्रिया को नियंत्रित करना।

अत: विकास के प्रति जन केन्द्रित दृष्टिकोण में वास्तविकता को स्थान प्राप्त कराने के लिए हम निम्नलिखित उपाय कर सकते हैं :

- विकास के लिए चुने जाने वाले क्षेत्र की समस्याओं की मोटे तौर पर समीक्षा करना
- क्षेत्र में पाई जाने वाली वर्तमान परिस्थितियों और अभिरुचियों का वर्णन
- परिवर्तनों और परिवर्तन के संकेतकों को पहचानना
- परिर्वतन की प्रक्रिया के दौरान गुणों के जिन मानकों को बनाए रखना है उनका ब्यौरा देना
- मण्डलों का निर्धारण और प्रत्येक मण्डल में वांछित अवस्था का उल्लेख करना
- प्रत्येक मण्डल की विशेषताओं को बनाए रखना उन पर प्रबन्ध तन्त्र के कार्यों से सहमति
- सार्वजनिक विज्ञप्ति एवं बहस द्वारा समग्र क्षेत्रों के प्रस्तावों की एक साथ समीक्षा

योजना प्रक्रिया में वास्तविक जनता की भागीदारी के विषय में निवासियों को विश्वास दिलाने और कार्यान्वयन एजेन्सी की जिम्मेदारी लागू कराने की दृष्टि से सार्वजनिक संवादों में उठाई गई समस्याओं के प्रति सदैव पारदर्शिता, सूचनाओं तक पहुंच और उपचार उपलब्ध होना चाहिए।

अत: आयोजकों ने एक कार्य बल की धारणा को विकसित किया है जिसे सफलता के लिए प्रतिनिधिक संगठन होना चाहिए। फिर भी कार्य बल को व्यवहारिक रूप से परामर्शदाताओं, प्रबन्धकों एवं अन्वेषकों द्वारा संचालित किया जाता है और नागरिकों तथा प्रयोक्ताओं की उसमें कोई भूमिका नहीं होती। यदि कार्य बल प्रतिनिधिक नहीं है तो वह पारदर्शिता सुनिश्चित नहीं कर सकता।

इसलिए कार्य बल अपने हस्तक्षेप को समयबद्ध समझता है। प्राथमिक आंकड़े एकत्र किए जाते हैं अत: बहस का आधार नहीं हो सकते। परिवर्तन का मूल्यांकन अक्सर केवल आर्थिक अर्थों में वर्धमान गणितीय मॉडल का उपयोग करते हुए किया जाता है जिसके प्रभाव कम स्पष्ट होते हैं। जिनका आकंलन कम हो पाता है और जो या तो महत्वपूर्ण नहीं समझे जाते या जिन पर बिल्कुल ही ध्यान नहीं दिया जाता। किसी लोकतंत्रीय ढांचे में निर्णय निर्धारण की परिणिति किसी प्रतिनिधिक समूह के निर्णय की अपेक्षा व्यावसायिकों की निरंकुश योजना में होता है।

20.6.2 वन्य प्राणी पर्यटन दिशा निर्देशन के उदाहरण

हमें वन्य प्राणी पर्यटन के दिशा निर्देशों की समीक्षा का उदाहरण लेना चाहिए। चूंकि विलासप्रिय पर्यटक साहसी मनोरंजन खोजते हैं और दूरस्थ क्षेत्रों में जाना पसन्द करते हैं इसलिए जिस प्रकार के शहरी आराम की उन्हें आवश्यकता होती है उसने समस्याएं प्रस्तुत करना प्रारंभ कर दी है जैसे जलाऊ लकड़ी की खपत, उपशिष्ट निपटान और ग्रामवासियों तथा पर्यटकों के मध्य स्वार्थों का टकराव। ऐसे पर्यटन से सम्बन्धित टकराव पर्यटकों की बढ़ती हुई संख्या और उनकी अनुपयुक्त अनियमित क्रियाओं का परिणाम है। अक्सर ये भुला दिया जाता है कि सैरगाह आन्दोलन मूल रूप से प्रकृति तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए हैं। पर्यटन एक गौण कार्यकलाप है। जबतक कि ऐसे संसाधनों का प्रबंध संरक्षण

आन्दोलन के उद्देश्यों और लक्ष्यों के अनुकूल तब तक नहीं होगा। जब तक पर्यटन विकास से झगड़ों को निपटाने के बजाए उनके बढ़ने की संभावना अधिक होगी।

- प्रत्येक क्षेत्र में अवलोकनार्थ आने वाले पर्यटकों के बढ़ते हुए दबाव को नियमित करने के लिए पर्यटन की योजनाओं में नए मार्ग निर्देशों की आवश्यकता है।
- केन्द्रीय क्षेत्र 300 वर्ग किलोमीटर में पर्यटन पर रोक लगाने की मांग करते हैं क्योंकि उसे सुरक्षित रखना है और स्पष्ट रूप से गैर पर्यटक क्षेत्र सीमांकित किया जाना है।
- प्रशासन द्वारा आगन्तुकों की अधिकतम संख्या निर्धारित करना है।
- दिन में आने वालों के लिए मार्गों का निर्धारण और खतरनाक कार्यों जैसे खाना पकाने के लिए आग जलाने, वाद्य यन्त्रों और ट्रांजिस्टरों के प्रयोग पर प्रतिबन्ध।
- प्रवेश द्वार पर केन्द्रों निर्वचन की आवश्यकता जो प्रकृति की शिक्षा और अभिविन्यास (orientation) प्रदान कर सके।
- समस्त आवास एवं ढाँचागत सुविधा उद्यान या मध्यवर्ती क्षेत्र के बाहर होनी चाहिए और उसमें वन्य उद्यान से 1 किलोमीटर के अन्दर होटल की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए और उद्यान की मूल्यांकित क्षमता के अनुसार ही कमरों की संख्या निर्धारित की जानी चाहिए।
- परिवहन बैटरी चालित होनी चाहिए और बड़ी बसों के स्थान पर छोटी बसों का उपयोग किया जाना चाहिए। विशेष रूप से उल्लिखित मार्गों पर साइकिल और पैदल यात्रा को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
- गाड़ियां खड़ी करने, गाइडों के उपयोग, वस्त्र, भाषा, कूड़ा करकट और फोटोग्राफी से सम्बन्धित कठोर आचार संहिता के पालन को सुनिश्चित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त पर्यटकों को चाहिए कि यदि कहीं आग लगती है या पशुओं को घायल होते देखें तो वन अधिकारियों को सूचित करें। उपभोगियों की संहिता व्यावसायिकों द्वारा बनाई जाती है। ये व्यवसायी किसी स्थान के पर्यावरण को सार्वभौमिक संसाधन के रूप में देखते हैं और प्रयोक्ताओं, यात्रा व्यापार और स्थानीय लोगों को लागू की जाने वाली संहिता के निर्धारण कार्य से अलग रखना कानूनी मानते हैं। यह स्पष्ट रूप प्रशासनिक दृष्टिकोण है जहां व्यवसायी संरक्षक को उन स्थानीय प्रयोक्ताओं से अधिक प्रातिनिधिक और संरक्षक मानते हैं जिनके पास पारंपरिक अधिकार है और जिन्हें आजकल प्राकृतिक एवं वन संसाधनों के अपकर्ष के लिए उत्तरदायी माना जा रहा है। मार्ग निर्देश पर्यटकों एवं प्रशासन दोनों को सुग्राही बनाने का प्रयास करता है। फिर भी संहिता के नियम सम्पूर्ण रूप से प्रशासकों के हाथ में है और स्थानीय नागरिकों को वन्य जीव आन्दोलन या संरक्षण को प्रोत्साहित करने में कोई भूमिका नहीं निभानी है। इस प्रकार की कोई सलाह नहीं है कि उन्हें नियामक एवं आर्थिक भूमिका दी जानी चाहिए। वह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण शैक्षिक भूमिका निभा सकते हैं क्योंकि वह क्षेत्र प्राणी व्यवहार और स्थानीय लोक कथाओं से परिचित हैं। इस दृष्टिकोण की कमजोरी भी पर्यटन उद्योग के आदेशों में झलकती है जो कि केवल परामर्श मात्र है। इस प्रकार वन्य प्राणी पर्यटन संचालक स्थानीय जानकर इस ज्ञान का उपयोग करता है कि पारिस्थितिकीय पर्यटन को किस प्रकार बढ़ावा दिया जा सकता है और जो यह मानता है कि व्यापार और संरक्षण के मध्य कोई टकराव नहीं है।

20.6.3 बाघ प्रदर्शन (Tiger show)

बाघ के प्रदर्शन पर प्रतिबन्ध लगाना एक अच्छा उदाहरण है। पर्यावरण विशेषज्ञ और व्यापार में बाघ प्रदर्शन को लेकर कान्हा एवं बाघवगढ़ में संघर्ष होने लगा जो अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षण थे। हाथियों पर बैठकर महावत बाघों का पीछा करता था और उनके पता लगाने पर प्रवेश द्वार पर उनकी स्थिति की सूचना भेजता था ताकि पर्यटकों को उस स्थान की ओर भेजा जाता था और यदि बाघ घास में होता तो पर्यटकों को सड़क से हटाकर पहुंचाया जाता था। इस प्रकार पर्यटकों को बाघ की एक झलक के लिए आश्वस्त कर दिया जाता था जो अन्य समस्त स्पीशीज से विशेषकर प्राकृतिक पृष्ठ भूमि में अधिक प्रामाणिक है । पर्यटन संचालक और महावत इस तन्त्र में लाभभोगी थे क्योंकि वे अपनी सेवाओं को बढ़ावा दे सकते थे और ये सुनिश्चित कर सकते थे कि पर्यटक हताश होकर वापस न जाएं।

पर्यावरण विशेषज्ञ इस प्रकार के अवलोकन का यह उपाय पशु की एकान्तता में हस्तक्षेप मान कर उसका विरोध करते थे। अनधिकृत शिकारी को भी इस प्रकार से बाघ को खोजने में सहायता मिल जाती थी जो अब अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में व्यापार की महत्वपूर्ण वस्तु बन गया है। उस प्रतिबन्ध के पश्चात अब बाघ अवलोकन की कोई गारंटी नहीं है और यह इस मत को प्रोत्साहन देता है कि बाघ एक संकटापन्न स्पीशीज है। ये एक काफी जटिल बहस है और विभिन्न वर्गों की स्थितियों का निर्धारण उनके स्वार्थों से होता है। इस प्रकार बाघ की एक झलक देखना एक सौभाग्य बन गया। इस मुद्दे ने यह स्पष्ट कर दिया है कि बाघ के संरक्षण को पर्यटक व्यापार पर कितनी वरीयता दी गई है और जंगल प्रशासन को प्रेरित किया गया कि वह अपने प्राथमिक दायित्व अर्थात स्पीशीज के संरक्षण को वरीयता दे।

20.6.4 वन मुखिया

प्रशासन को और प्रातिनिधिक बनाने के लिए पर्यावरण मन्त्रालय ने वन मुखिया का विचार आरंभ किया। इस योजना के अन्तर्गत ग्रामीण स्तर पर संरक्षण कार्यों के संचालन हेतु पंचायत एक वन मुखिया को नामित करेगी। ये योजना किसी अधिसूचित क्षेत्र में चल रही संयुक्त वन प्रबन्ध योजना का स्थान लेगी। वन मुखिया मंडलीय वन अधिकारी द्वारा नामित किया जाएगा इसलिए वह प्रशासन के प्रति ही उत्तरदायी होगा। पर्यावरण विशेषज्ञों को भय है कि ऐसी योजना बिल्कुल निचले स्तर पर भ्रष्टाचार को जन्म देगी। वन मुखिया वन उत्पादों को बाजार में बेच कर उसकी 10% आय कमाएगा। ये धन संयुक्त प्रबन्ध योजना के अपने हिस्से के अतिरिक्त होगा। अतः वह किसी अन्य ठेकेदार की भांति कार्य करेगा क्योंकि वह कुल उत्पादों की बिक्री पर लाभ कमाएगा। इस प्रकार वह ग्रामीण समुदाय और वन संसाधनों के मध्य आ जाएगा। वन मुखिया के चयन में मध्यस्थता का तत्व है और वह ग्राम वन संरक्षण समिति के स्थान पर किया जाना अफसरशाही आचरण का प्रदर्शन है। इसके बजाए ग्राम वन संरक्षण समिति को अधिक विस्तृत आधार वाला होना चाहिए न कि वन प्रशासन से संबंधित। नियन्त्रण की श्रेणीबद्ध प्रकृति और निर्णय लेने का अधिकार समुदाय के बाहर होना अधिकार के ढांचे को प्रदर्शित करता है। एक ऐसा ढाँचा जो आधार से अलग है। ऐसा ढाँचा निश्चित रूप को टकराव से रोकने के बजाए उसे और बढ़ाएगा।

बोध प्रश्न 2

1) विवादों को हल करने के लिए एक तन्त्र के रूप में बातचीत करने में क्या कठिनाई है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) वन्यजीव संबंधी निर्देशों को सम्पूर्ण रूप से प्रशासन पर छोड़ देने में क्या आपत्ति है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) बाघ प्रदर्शन से सम्बन्धित विवाद पर क्या आप कुछ प्रकाश डाल सकते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

20.7 सारांश

लोग जीवन की गुणवत्ता को स्थायी पर्यावरण के बराबर मानते हैं जो स्वच्छ वायु, पेयजल और जिन से हम प्यार करते हैं उनको सुरक्षा प्रदान करता है। हमारे नगरों में जीवित रहने योग्य परिस्थितियां प्रतिदिन झोपड़ पट्टी जैसी होती जा रही है। परिवहन और कूड़े कचरे का निपटान दो अत्यन्त महत्वपूर्ण संकट है जो तनाव और बीमारियों तक पहुंचाते हैं। हिमालय चिथड़े-चिथड़े हो चुका है और शिवालिक को सुधारा नहीं जा सकता। घाट (पश्चिमी घाट) कुछ ऐसी वृहत परियोजनाओं के कारण संकटमय हो चुके हैं जो पर्यटन के विनाशकारी रूप हैं। हरित पट्टियां बंजर होती जा रही है। ये सब गत पचास वर्षों के योजनाबद्ध विकास का परिणाम हैं। विकास पर बहस बढ़ते हुए विनाश को रोकने के प्रयास की ओर एक कदम है। इसमें निहित स्वार्थों पर आधारित होने के बजाय लोगों की बात सुनने का प्रयास किया गया है। इस बहस को समझने के कारण ही हम पर्यटन के कारण होने वाले पर्यावरण अपकर्ष और पर्यटन के उत्पादों को समझ सकते हैं।

20.8 शब्दावली

सार्वभौमिकरण : सम्पूर्ण विश्व में विशेषरूप से व्यापार द्वारा अर्थव्यवस्था के एकीकरण के प्रयासों की वर्तमान प्रक्रिया।

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष/विश्व बैंक की शर्तें : अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक द्वारा ऋण लेने की निर्धारित शर्तें। इस इकाई में यह तर्क वितर्क किया गया है कि इन शर्तों ने विकास प्रक्रिया में योगदान दिया है जिसने पर्यटन को भी प्रभावित किया है।

20.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 20.3 । भूमि उपयोग माडल में विस्थापन परिवर्तन और उसके निष्कर्षों पर बल दीजिए।

2) देखिए भाग 20.4 । इस बात पर बल दीजिए कि किस प्रकार विश्व पर्यटन संगठन पर्यटन को पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति चेतना में वृद्धि करने के साधन के रूप में देखता है।

3) देखिए उप-भाग 20.5.2 कार्यप्रणालियों पर नियन्त्रण और पर्यटक व्यवहार पर बल दीजिए।

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 20.6 । पक्षों की वार्ता के लिए सहमति की समस्या पर बल दीजिए।

2) देखिए उप-भाग 20.6.2 । स्थानीय एवं अशासकीय नागरिकों को इस संदर्भ में सम्मिलित करने पर बल दीजिए।

3) देखिए उप-भाग 20.6.3 । इस बात पर बल दीजिए कि किस प्रकार पर्यटन संचालक लाभार्थी के रूप में देखा जाता है और पर्यावरण विशेषज्ञों के प्राणियों की एकान्तता के प्रभावों से सम्बन्धित तर्कों पर भी बल दीजिए।